International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 126-130 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

ICSSR | |National Seminar on "Indian Knowledge System: Education and Prosperity" Org. by Dhanauri P.G. College, Roorkee (28-29 Mar., 2025)

DOI : 10.5281/zenodo.15823798

प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान पर विज्ञान और प्रौधोगिकी का प्रभाव

पंकज कुमार[1] एवं आनन्द प्रकाश[2]

1. असि० प्रो० (भूगोल विभाग) जे०वी० जैन डिग्री कॉलेज, सहारनपुर
2. सि० प्रो० (भूगोल विभाग) घनौरी पी0जी0 कॉलेज, घनौरी, हरिद्वार

Received : 20/03/2025	***1st BPR*** : 10/04/2025	***2nd BPR*** : 01/05/2025	***Accepted*** : 22/05/2025

Abstract

प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान परम्परा में भूगोल विषय ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। प्राचीन भूगोल विषय केवल विभिन्न स्थानों, पर्वत, पठारों नदी घाटियों इत्यादि की पहचान तक ही सीमित नहीं था, अपितु इसका सम्बन्ध प्राकृतिक घटनाओं, पर्यावरणीय घटनाओं, मानवीय जीवन, खगोलीय घटनाओं, जलमण्डल, स्थल मण्डल, वायुमण्डल एवं स्थापत्य विज्ञान आदि से था। यदि प्राचीन भारतीय भूगोल पर दृष्टि डाले तो उस समय भौगोलिक ज्ञान किसी भी प्रकार से केवल सैद्धान्तिक न होकर अनुभव, प्रयोग एवं प्रेक्षणों पर आधारित था। प्राचीन वैदिक काल से लेकर वर्तमान आधुनिक काल तक भूगोल विषय की अपनी एक केन्द्रीय भूमिका रही हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हम जानने का प्रयास करेगें की किस प्रकार प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान परम्परा ने वर्तमान विज्ञान और प्रौधोगिकी को समृद्ध बनाने और वर्तमान आकार देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

***Keywords*:** प्राचीन, भारतीय, भौगोलिक ज्ञान, विज्ञान, प्रौधोगिकी एवं प्रभाव।

प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान

भारत में भौगोलिक अध्ययन का प्रारम्भ सिन्धु घाटी सभ्यता काल (4000 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व) से माना गया है। सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान यद्यपि कोई ग्रन्थ नहीं मिला फिर भी यहॉ मिली विभिन्न वस्तुओं चित्रित सूचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है, सिन्धु सभ्यता काल अत्यन्त ही विकसित अवस्था को प्राप्त कर चुका था।

प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान के लिखित प्रमाण वैदिक युग में प्रारम्भ हुई जब 'भू', 'भुवः', और 'स्वः' जैसे शब्दों द्वारा पृथ्वी के वायुमण्डल और आकाश से सम्बन्धित अवधारणाऍ प्रस्तुत की गई। उस समय भूगोल स्थानों के भूगोल तक सीमित न होकर समग्र दृष्टिकोण जैसे पर्वत, पठार, मैदान नदियों प्रकृति, जलवायु–वनस्पति खनिज पदार्थ इत्यादि का प्रतिनिधित्व करता था।

वैदिक काल 2500 ई0पू0 से 1000 ई0पू0 तक का माना जाता है। इस अवधि में वैदिक ग्रन्थों की रचना हुई थी। इस समय ऋग्वेद, अर्थववेद, सामवेद, और यजुर्वेद की रचना हुई थी। इस समय ऋग्वेद में जहॉ एक ओर विश्व–उत्पत्ति तथा ब्रहमाण्ड विज्ञान के बारे में विवेचना मिलती है, वही दूसरी ओर यजुर्वेद, सामवेद तथा अर्थववेद में विभिन्न स्थानों की भौगोलिक दशाओं जनसंख्या के सांस्कृतिक पक्षों, ब्रहमाण्ड विज्ञान, विश्व की उत्पत्ति, वायुमण्डल तथा प्राकृतिक वनस्पति का विस्तृत विवरण मिलता है।

वैदिक काल के बाद आये पौराणिक काल (1000 से 800 ई0 पूर्व) में धर्म एवं दर्शन के साथ–साथ ब्रहमाण्ड दर्शन, सृष्टि–रचना, पृथ्वी की उत्पत्ति उसके द्वीप एवं सागरों का वर्णन प्रत्येक का विभाजन एवं उपविभाजन प्रतयेक द्वीप का यथासम्भव स्पष्ट वर्णन व उनकी वनस्पति, पर्वत जैसे प्राकृतिक तथ्यों के आधार पर नामकरण भारतीय उपमहाद्वीप के उपखण्डों अथवा वर्ष और पर्वतों एवं भारतवर्ष के जनपदों, राज्यों, बस्तियों एवं प्रमुख मार्गो व नगरों का वर्णन दिया गया है।

प्राचीन भौगोलिक काल में विज्ञान और प्रौधोगिकी का प्रारम्भिक चरण–

विज्ञान शब्द संस्कृत शब्द विज्ञा से बना है।, जिसका अर्थ होता हैं विशेष ज्ञान प्राचीन भूगोल में विज्ञान का उद्देश्य दैहिक, मानसिक और अध्यात्मिकता का सन्तुलन था। मानव जीवन को प्रभावी, सुरक्षित एवं सरल बनाने के लिए जब वैज्ञानिक सिद्धान्तों का सहारा लिया जाता है। तब वह प्रौधोगिकी कहलाती है। प्राचीन काल में भारतीय विद्वानों में जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु इसी प्रकार की प्रौधोगिकी का सहारा लिया था।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 126-130 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

वैदिक युग में ज्ञान प्रणाली मौखिक परम्परा पर आधारित थी। वेदों की सभी जानकारी ज्योतिषशास्त्र, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, वनस्पति विज्ञान, गणित और शब्दशास्त्र से सम्बन्धित रहीं है। इस काल में गणितशास्त्र, खगोलशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, धातु और जल प्रबन्धन के क्षेत्रों में प्रमुख वैज्ञानिक प्रगति हासिल की।

प्राचीन भौगालिक ज्ञान की यह प्रगति तत्कालीन समाज और संस्कृति से जुड़ी थी। जीवन की आवश्यक आवश्यकताएँ जैसे भोजन प्राप्ति के क्षेत्र में (कृषि उपकरण) आवास के निर्माण में (स्थापत्य) वस्त्र निर्माण आदि में ये तकनीकें न केवल स्थानीय संसाधनों पर आधारित थी, अपितु पर्यावरण के अनुकूल थी। यह प्रौधोगिकी केवल शाही दरबारों तक सीमित नहीं थी, अपितु ग्रामीण क्षेत्रों, गुरूकुलों तथा शिल्प परंपराओं तक अपने रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। प्राचीन नांलदा, तक्षशिला तथा वल्लभी विश्वविद्यालयों में पढायें गये विषयों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

प्राचीन भौगोलिक ज्ञान और प्रौधोगिकी का पारस्परिक सम्बन्ध

(i) **प्राचीन शिक्षा प्रणाली और भूगोल**– प्राचीन गुरूकुल पद्वति के अनुसार पढ़ाये जाने वाले विषय जैसे खगोलशास्त्र, जयोतिषशास्त्र, आयुर्वेद और स्थापत्य कला से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में भूगोल और प्रौधोगिकी में पारम्परिक अर्न्तसम्बन्ध था।

(ii) **भूगोल और खगोल शास्त्र का पारस्परिक सम्बन्ध–** प्राचीन भारतीय विद्वान बहुमुखी प्रतिभा रखते थे। भारत के प्राचीन खगोलविद आर्यभट्ट, वराहमिहिर, और भास्कराचार्य इत्यादि ने खगोलशास्त्र की गणनाएँ नक्षत्रों की स्थिति, मौसम का पूर्वानुमान दिशाओं का ज्ञान आदि के सटीक वर्णन प्रस्तुत किये थे।

(iii) **कृषि और भूगोल का पारस्परिक सम्बन्ध–** प्राचीन काल से ही भारत एक कृषि प्रधान देश रहा हैं जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से तत्कालीन भौगोलिक ज्ञान से जुड़ा था। मौसम की स्थिति वर्षा की मात्रा मिट्टी की गुणात्मकता जल प्रबन्ध सिंचाई की विधियॉ आदि सभी तत्वों की गहन जानकारी पराशर और कात्यायन जैसे प्राचीन कृषि शास्त्रियों की ही देन थी।

(iv) **पर्यावरण और चिकित्सा का पारस्परिक सम्बन्ध–** धनवन्तरि का नाम आयुविज्ञान में विशेष उल्लेखनीय है। वह आयुर्वेद के प्रमुख आचार्य माने जाते है। प्राचीन साहित्यिक जनक्षुति के अनुसार धनवन्ती चन्द्रगुप्त द्वितीय की राजसभा में उपस्थित नौ रत्नों में से एक थे। चरक सहिता जिसे आधुनिक चिकित्साशास्त्र का विश्वकोष मानते है। 'चरक' राजा कनिष्क के राजवैध थे। छठी शताब्दी पूर्व वाग्भट्ट द्वारा रचित अष्टांग हृदय नामक ग्रन्थ भी चिकित्सा क्षेत्र की प्राचीन प्राकृतिक धरोहरों में से एक है। किसी भी औषधि का प्रयोग रोगी के देश, ऋतु और प्रकृति के अनुसार किया जाता था।

(v) **स्थापत्य एवं भौगोलिक स्थति का पारस्परिक सम्बन्ध–** सिन्धु कालीन प्राचीन नगर नियोजन द्वारा प्रमाणित होता है कि भूगोल की गहन समझ के आधर पर ही तत्कालीन नगरों की जल निकासी सड़क व्यवस्था भवनों की दिशा आदि के आधार पर नगर नियोजन किया जाता था। विभिन्न योजना स्थलों की भौगोलिक स्थिति, स्थल का ढलान जल प्रवाह भूमिगत जल के स्रोत भूस्खलन की सम्भावना को प्रधानता दी जाती थी।

उपरोक्त के अतिरिक्त प्राचीन काल के भारतीय व्यापारियों द्वारा समुद्री मार्गो के उपयोग में नौकायान के समय हवाओं की दिशा, ज्वार भाटे की जानकारी समुद्री द्वीपों और तटरेखाओं की अच्छी भौगोलिक समझ थी। समुद्रिकाशास्त्र तथा नौतिल्य नामक ग्रन्थ नौवहन की कला के प्राचीन संकलन रहे है। अर्थात वह समुद्री भूगोल की स्पष्ट समझ रखते थे। प्राचीन वेधशालएँ तथा विभिनन खगोलीय यंत्र जैसे नोमोन यंत्र, जल यंत्र ध्रुवघटी यन्त्र चक्रयन्त्र एस्ट्रोलेव का प्रयोग किया जाता रहा है। ग्लोब पर प्रमुख अक्षांश देशान्तरों की स्थिति का निर्धारण ज्ञात विश्व की लम्बाई चौड़ाई पृथ्वी की परिधि की गणना हेतु उस समय भी अनेक खगोलीय यन्त्र प्रयोग में लाये जाते थे। जो प्राचीन भौगोलिक ज्ञान और प्रौधोगिकी के पारस्परिक सम्बन्धों को दर्शाता है।

प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान के योगदान देने वाले प्रमुख विद्वान

1. **आर्यभट्ट–** आर्यभट्ट नामक खगोलशास्त्री का जन्म 476 ईस्वी में गुप्तकाल में पाटलीपुत्र में हुआ था, उन्होंने पृथ्वी की परिधि लगभग 24835 मील बतायी जो वर्तमान विद्वानों द्वारा आकलित परिधि (24901 मील) से काफी समीप है। इन्होंने 13 वर्ष की अल्प आयु में ही 'आर्यभट्ट' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें गणितीय सिद्धान्तों तथा सूत्रों का विवरण दिया गया है। इन्होंने सूर्य एवं चन्द्रग्रहण का कारण चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी के मध्य सम्बन्ध बताया। आर्यभट्ट ने ही सर्वप्रथम पृथ्वी की आकृति गोलाभीय बताई। इन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि पृथ्वी तथा अन्य आकाशीय पिण्ड सूर्य के चक्कर लगाते हैं।
2. **वाराहमिहिर (505-587 A.D.)** वाराहमिहिर प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे, जिन्होंने प्रमुख खगोलीय ग्रन्थ पंच सिद्धान्तिका की रचना की। इन्हें पृथ्वी के अक्षांश ज्ञात करने की विधि मालूम थी। वाराहमिहिर ने ही भारतीयों को गणित में दशमलव के बारे में अवगत कराया, जहाँ सर्वप्रथम अरबवासियों ने भी इसे यहीं से सीखा था।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 126-130 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

3. **भास्कराचार्य** – भास्कराचार्य का जन्म सन् 1114 A.D. में हुआ था। उन्होंने बताया कि पृथ्वी गोल है तथा अपने गुरुत्वाकर्षण के कारण सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। इन्होंने दो प्रमुख ग्रन्थों की रचना की थी। प्रथम ग्रन्थ **'सिद्धान्त शिरोमणी'** था जिसके खण्ड क्रमशः अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति, गोलाध्याय तथा ज्योतिषशास्त्र हैं। दूसरा ग्रन्थ **'करण कुतूहल'** लिखा था, जिसमें कुछ प्रमुख अन्वेषणयुक्त खोजों का विवरण दिया था। भास्कराचार्य ने अपने प्रथम ग्रन्थ में वायुमण्डल की परतों की माप भी दी है। भास्कराचार्य ने ही पृथ्वी को 360° में विभक्त करके अक्षांश और देशान्तरों का नगरों को स्थिति बताने में उपयोग किया था।
4. **कौटिल्य (चाणक्य)** – कौटिल्य जो आचार्य चाणक्य के नाम से प्रसिद्ध हैं। ईसा पूर्व चौथी सदी में मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त के गुरु तथा प्रधानमंत्री थे। इन्होंने मौर्यकालीन भारत का विवरण अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ **'अर्थशास्त्र'** में किया था। इसमें भारत के **'आर्थिक भूगोल'** का वर्णन किया गया है। उनके अनुसार उस काल में उत्तरी भारत के व्यापार से दक्षिणी भारत का व्यापार अधिक महत्त्वपूर्ण था। उत्तरी भारत से रेशमी वस्त्र, ऊनी कम्बल, चमड़ा, घोड़े आदि का आयात किया जाता था। चाणक्य ने इस ग्रन्थ में भारत की कृषि व्यवस्था, औद्योगिक प्रगति एवं व्यापार की विस्तृत विवेचना की है।

   राजनीतिक भूगोल की दृष्टि से भी कौटिल्य का अर्थशास्त्र महत्त्वपूर्ण है। इसमें तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों का विवरण दिया गया है, जिनमें मगध राज्य की क्रान्ति, मौर्य वंश की स्थापना विदेशी यूनानियों की सत्ता को नष्ट करना तथा यवनों के आक्रमण से राष्ट्र सुरक्षा करना आदि प्रमुख हैं। इस ग्रन्थ में मौर्य साम्राज्य को राजधानी पाटलीपुत्र, उज्जैन, तक्षशिला आदि नगरों की भौगोलिक तथा प्रशासनिक जानकारी दी गयी है। अतः स्पष्ट है कि कौटिल्य ने नगरीय भूगोल पर भी प्रकाश डाला था ।
5. **कालीदास**– महाकवि कालीदास महाराजा विक्रमादित्य के दरबार के प्रधान विद्वान् थे। इन्होंने पाँच प्रमुख ग्रन्थों की रचना की थी जिनमें **'मेघदूत'** एवं **'रघुवंश'** ग्रन्थों में भौगोलिक जानकारी मिलती है। महाकवि कालीदास का ग्रन्थ **'मेघदूत'** भौगोलिक दृष्टि से **'जलवायु विज्ञान'** माना गया है। इसमें इन्होंने वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने का कारण, वर्षा की मात्रा, विभिन्न आकृति के मेघों के 10 प्रकार तथा उनके गुणों का वर्णन किया है। अपने दूसरे काव्य **'रघुवंश'** में ऋतुओं तथा जलवायु का वर्णन प्रस्तुत किया है । अतः महाकवि कालीदास को प्राचीन भारतीय काल का जलवायुवेत्ता भी कहते हैं।
6. **धन्वन्तरि** – धन्वन्तरि का नाम आयुर्विज्ञान में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये आयुर्वेद के प्रमुख आचार्य माने जाते हैं। प्राचीन साहित्यिक जनश्रुति के अनुसार धन्वन्तरि चन्द्रगुप्त द्वितीय की राजसभा में उपस्थित नौ रत्नों में से एक थे।
7. **वाग्भट्ट** – इन्होंने 6वीं शताब्दी के प्रारम्भ में 'अष्टांग हृदय' नामक ग्रन्थ की रचना की थी इसमें प्राकृतिक धरोहर के चिकित्सा महत्त्व का विवरण है।
8. **चरक** – चीनी जनश्रुति के अनुसार 'चरक' राजा कनिष्क के राजवैद्य थे। इन्होंने 10 अध्यायों वाली 'चरक संहिता' की रचना की जिसे आधुनिक चिकित्सा शास्त्र का विश्वकोश मानते हैं।

प्राचीन काल में खगोलशास्त्र, भूगोल और गणित का अर्न्तसम्बन्ध

प्राचीन कालीन उपरोक्त तीनों विषयों का समन्वय केवल सैद्धान्तिक न होकर व्यावहारिकता से प्रोरित था। ऋषि परम्परा में यज्ञ और विभिन्न संस्कारों के मुहूर्त निकालने से लेकर वास्तुशास्त्र, पंचाग की रचना तथा यात्रा इत्यादि के समय इन विषयों का समन्वय अनिवार्य रूप से किया जाता था। जैसे उदाहरण के लिए आर्यभट्ट की गोलपथ की धारणा जो दर्शाती है कि सभी ग्रह वृत्तकार मार्गो का अनुसरण करते है। यह ज्ञान अकाशीय पिंडों की स्थिति और गति इत्यादि के आधार पर भौगोलिक स्थिति को समझाता है। शुल्ब सूत्र में यज्ञ वेदियों के निर्माण हेतु उच्च स्तरीय ज्यामितीय ज्ञान मिलता है। इसी प्रकार भास्कराचार्य की खगोलिय गणनाओं में त्रिकोणमिति का प्रयोग।

मन्दिरों और स्थापत्य में खगोलीय घटनाओं व भौगोलिक स्थिति का अर्न्तसम्बन्ध। कोर्णाक का सूर्य मन्दिर व मैदुरे का मीनाक्षी मन्दिर। खगोल और भूगोल का संबंध न केवल वैज्ञानिक रहा है अपितु सामाजिक जीवन में लग्न, नक्षत्र, दिशा, शुभ मुर्हूत गणनाओं में भी अन्तर्निहत है। प्राचीन काल से ही भूगोल केवल दृश्यात्मक नहीं रहा बल्कि उसमें मापनी, गणना, संख्यात्मक आंकलन भी सम्मिलित रहा है। जैसे ब्रहमाण्ड मापन में योजना कोस और योजनों के रूप में किया जाना भूगोल में गणितीय दृष्टिकोण को दर्शाता है। अर्थात गणित, भूगोल और खगोल तीनों ही एक त्रिवेणी के रूप में प्राचीन काल से एक दूसरे के पूरक रहें है।

प्रभाव का विश्लेषण और मूल्यांकन–

प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान परम्परा को विज्ञान और प्रौधोगिकी के प्रभाव ने केवल ज्ञान की संरचना तक ही प्रभावित नहीं किया अपितु सामाजिक–सांस्कृतिक और तकनीकी दृष्टि से भी प्रभावित किया है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 126-130 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

1. वैदिक कालिन ग्रन्थों से लेकर खगोलशास्त्रीय ग्रंथो तक प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान एक जटिल, व्यवस्थित और पर्यवेक्षण आधारित पद्वति के रूप में भूगोल के साथ समाहित था।
2. नगर नियोजन, आवास निर्माण, धार्मिक स्थलों का निर्माण जल की व्यवस्था सांस्कृतिक उत्सवों और कृषि कालचक्रों की योजना, प्राकृतिक और खगोलीय घटनाओं का अध्ययन भी वैज्ञानिक ढंग से भौगोलिक स्थितियों के आधार पर किये जाते थे।
3. कृषि की वैज्ञानिक प्रणाली और जलवायु आधारित रणनीतियों ने भारत को प्राचीन काल से ही खाद्य सुरक्षा और वैश्विक व्यापारिक शक्ति के रूप में सदैव आत्मनिर्भरता का आधार प्रदान किया।
4. प्राचीन काल से ही पर्यावरण संरक्षण संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग की शिक्षा हमें अपने प्राचीन ग्रन्थो से प्राप्त होती रही हैं यह दृष्टिकोण ही आज भी सतत विकास की अवधारणा का पूर्वगामी रूप है।
5. प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में अत्यन्त उन्नत तकनीके विकसित हुई जैसे वास्तुशास्त्र और शिल्पशास्त्र में भूखण्डों, दिशाओं और पर्यावरणीय दशाओं के अधार पर निर्माण कार्य किये जाते थे। जलप्रबन्धन की अनेक तकनीकें बावडियाँ जलाशयों का निर्माण भूगोल और विज्ञान के समन्वय से प्रौधोगिकी विकास करते थे।
6. नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी आदि प्राचीन विश्वविद्यालयों में भूगोल, गणित, खगोल, चिकित्सा तथा स्थापत्य जैसे विषय केवल भौगोलिक ज्ञान को न देकर सैद्वान्तिक रूप से व्यावहारिक प्रयोगों के माध्यम से सिखाये जाते थे।

अतः हम यदि आज के संदर्भ में प्राचीन भारतीय भौगोलिक पद्वतियों का अध्ययन करे तो पाते है कि उनमें छिपी हुई वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय समझ आज भी प्रासांगिक है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुर्नमूल्यांकन–

आधुनिक संदर्भ में यह जानना अति आवश्यक है कि क्या? आज सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन, परिस्थितिक असंतुलन और सतत विकास आदि जैसे ज्वलन्त मुद्दों से जुझ रहा है। क्या? प्राचीन भारतीय ज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनेक तत्व वर्तमान में उपयोगी सिद्ध हो सकते है?

1. स्थानीय जलवायु के अनुसार निर्मित भवन जैसे राजस्थान का प्राचीन नगरों की हवेलियॉ, बावडियॉ, झीले, कुएं, तालाब जैसी पांरपरिक संरचनाओं को आज पुनः अपनाया जा रहा है।
2. 'प्रकृति रक्षति रक्षितः' का यह सिद्धान्त आज सतत विकास के रूप में आधुनिक विश्व में विमर्श का विषय बन चुका है।
3. कृषि में पांरपरिक जैविक खेती को पुनः प्रोत्साहित किया जा रहा है।
4. यद्वपि आज का भौगोलिक ज्ञान जी0आई0एस0 सुदूर संवेदन, जी0पी0एस0 जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को आत्मसात कर चुका है, परन्तु आधुनिक तकनीकों के प्रयोग में भी आज स्थानीय पांरपरिक की पद्वतियों को भी जोडा जा रहा है।
5. आई0आई0टी0, आई0आई0एस0सी0 एवं भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण जैसी अनेक संस्थायें आज प्राचीन भौगोलिक ज्ञान और विज्ञान पर शोध कर रही है। एन0ई0पी0–2020 में इस पांरपरिक ज्ञान का समाहित करने का प्रयास किया गया है।
6. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न शोध संस्थाओं में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, चरक, सुश्रुत के सहित्यों पर शोध कर रही है।
7. युनेस्को के मैमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में गीता और भरतमुति के नाय्यशास्त्र को शामिल किया गया है।
8. अनेक भारतीय जल प्रबंधन प्रणालियों को युनेस्को ने विश्व धरोहर के रूप में सम्मिलित किया है।

यद्वपि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराओं से प्राप्त प्रतिक्रिया सकारत्मक दृष्टि गोचर होती है तथापि केवल हम अतीत के गौरव के आधार पर प्राचीन ज्ञान को बढ़ा चढाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते। आधुनिक अनुसंधान पद्वति, परीक्षण ओर समीक्षा के मापदण्डों के अनुसार पारम्परिक ज्ञान का मूल्यांकन किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि विभिन्न मिथक और वैज्ञानिक तथ्यों में स्पष्ट अन्तर किया ही जाना चाहिए।

हमें प्राचीन पांरपरिक ज्ञान को वर्तमान नवाचार के साथ जोड़कर उपयोग में लाना होगा। बहुआयामी अध्ययनों के माध्य से भूगोल, गणित, विज्ञान, समाजशास्त्र और तकनीकी ज्ञान को एकीकृत करते हुए स्थानीय समुदायों की भागीदारी के आधार पर पुर्नमूल्यांकन को व्यावहारिक बनाना होगा।

निष्कर्ष

अन्त में हम कह सकते है कि प्राचीन भारतीय भौगोलिक ज्ञान और प्राचीन विज्ञान व प्रौधोगिकी का प्रभाव हमारी समृद्ध सांस्कृति विरासत का प्रमाण है इसी के आधार पर भारतीय समाज ने हजारों वर्षो तक अपनी जीवनशैली और प्रकृति के संतुलन को बनाए रखा। वर्तमान समय में जब सम्पूर्ण विश्व परिस्थितिक असंतुलन के अनेक ज्वलन्त मुद्दो से जुझ रहा है। ऐसी स्थिति में प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य कर सकता है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा कोई सीमित विचारधारा नहीं थी बल्कि एक जीवंत, गतिशील और व्यवहार केन्द्रीत दृष्टिकोण था,

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 126-130 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

आज के संदर्भ में भी इसका मूल्य केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण के रूप में न होकर नीतिगत शैक्षणिक और पर्यावरणीय दृष्टि से अमूल्य हो सकता है।

संदर्भ

1. माजिद हुसैन, भौगोलिक चिन्तन का इतिहास, रावत पब्लिकेशनस नई दिल्ली, 2008 पेज 60–75।
2. बी0सी0 जाट, भौगोलिक चिन्तन का इतिहास, मलिक एण्ड कम्पनी जयपुर, 2010 पेज 21–48
3. ऋग्वेद–मण्डल 10, सूक्त 75, मंत्र 5
4. वात्स्यायन, भारतीय संस्कृति, किताबघर प्रकाशन, गोरखपुर, 1960 पेज–87
5. पतञ्जलि–महाभाण्य पेज 376
6. एस0एम0 अली, पुराणों का भूगोल पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, 1966 पेज 15
7. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, पृ0 1
8. यजुर्वेद, अध्याय 3, मंत्र 1
9. ऋग्वेद, मण्डल 6, सूक्त 13, मंत्र 31
10. एम0एल0 भार्गव, ऋग्वैदिक भारत का भूगोल, लखनऊ 1964 पेज 24–27

*** ***